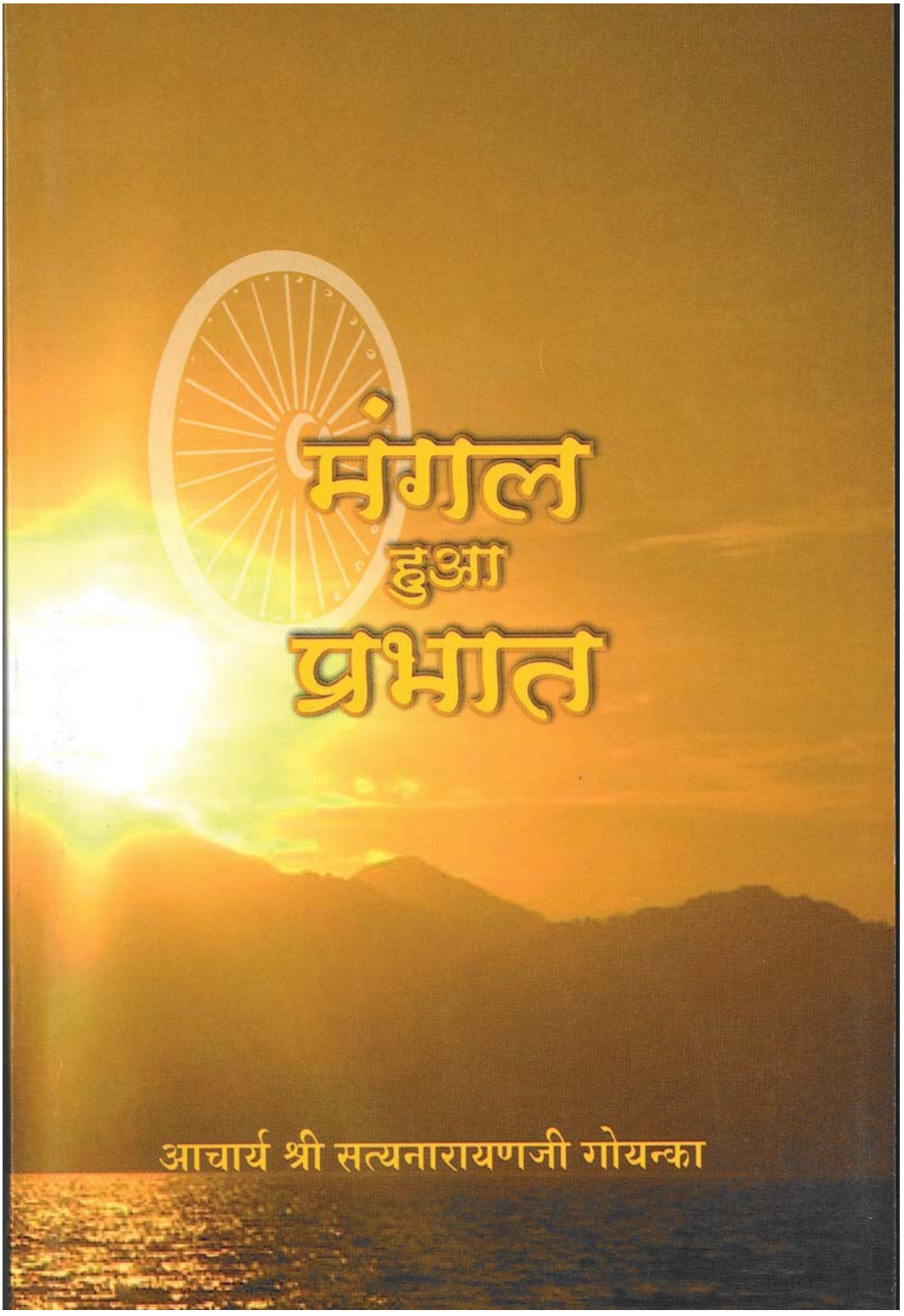
मंगल
हुआ
प्रभात
आचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का

मंगल हुआ प्रभात

विपश्यी साधकों के प्रेरणार्थ

आचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

मंगल हुआ प्रभात

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय ६

अध्याय १ : सादर करूं प्रणाम ११-१२

नमन करूं गुरुदेव को १३
करूं वंदना बुद्ध की १८
सम्मुख दीपङ्कर खड़े २२
नमन करूं मैं धरम को २८
करूं वंदना संघ की २९
सादर करूं प्रणाम ३०

अध्याय २ : जागो लोगो जगत के ३१-३२

मंगल हुआ प्रभात ३३
अन्य रतन ना कोय ३७
सही मित्र है सोय ३९
धर्म मूल पहचान ४२
धर्म बड़ा बलवान ४७
जात-पांत नहिं धरम है ५४

अध्याय ३ : सुनो धर्म का सार ५७-५८

धर्म विश्व का एक है ५९
धारे ही सुख होय ६४
अंध भक्ति ना धर्म है ७४
संप्रदाय ना धर्म है ८१
कर्मकांड ना धर्म है ८७

धर्म न तुलसीमाल ९०
लाख बार धिक्कार ९१
अध्याय ४ : अपना कर्म सुधार ९५-९६
यह बहता संसार ९७
बीता क्षण ना आय १००
मन बंधन का मूल १०३
मन बैरी मन मीत १०६
मन निर्मल हो जाय १११
तू ही तेरा मीत ११४
अपना कर्म सुधार ११८
नये कर्म मत बांध १२३
गृही धर्म का सार १२५
जागे बोधि अनंत १३०
वो ही सच्चा संत १३२
अध्याय ५ : आर्य सत्य अनमोल १३७-१३८
दुखिया सब संसार १३९
कारण तेरे दुःख के १४४
दुःख निवारण कर लिया १५२
यही मार्ग है मुक्ति का १६०
अध्याय ६ : शुद्ध धर्म का शांति पथ १६३-१६४
धर्म सदा जागृत रहे १६५
बहे त्रिवेणी धार १६९
अपना शील सुधार १७३
पाए पद निर्वाण १७८
प्रज्ञा जागे बलवती १८१

अध्याय ७ : मिली सुमंगल साधना १८७-१८८

बोधिवृक्ष की छांह में १८९
स्तूप स्थापना होय १९०
तीन रतन की शरण में १९३
साधन आना-पान १९४
विपश्यना के नीर से १९८
चित्त निखरता जाय २०७
पानी के से बुलबुले २१७
देखें अपने दुःख को २२१
जब अनात्म का बोध हो २२२

अध्याय ८ : समता धारे धीर २२५-२२६

श्रेष्ठ धर्म का दान २२७
शील बिना सुख है कहां? २३२
प्रज्ञा जगती जाय २३४
प्रबल रहे पुरुषार्थ २४०
परम सत्य दिख जाय २४१
समता धारे धीर २४३
अधिष्ठान २५०

अध्याय ९ : मंगल मैत्री नीर २५१-२५२

प्यार भरे भरपूर २५३
जन-जन मंगल होय २५६
समता दृढ़ बलवान हो २६९
मंगल मैत्री नीर २७०

प्रकाशकीय

शिविर के दौरान साधक पूज्य गुरुदेव श्री गोयन्काजी के दोहे सुनते हैं अथवा विपश्यना पत्रिका में इन्हें पढ़ते हैं तो लोगों की स्वाभाविक इच्छा होती है कि इनका पूर्ण संकलन कहीं पढ़ने को मिले। अतः हर शिविर के अंत में इनकी मांग बराबर बनी रहती है। परंतु हिंदी और राजस्थानी दोहों की संख्या हजारों में थी और वह भी यत्र-तत्र बिखरे हुए थे। अतः उनके संकलन, वर्गीकरण और संपादन का काम आसान नहीं था। इस काम को सफल बनाने में कई साधकों ने प्रचुर सहयोग दिया। जयपुर की पुरानी साधिका सुश्री प्रभात कुमारी ने अथक परिश्रम करके इन्हें संकलित किया तो जयपुर के ही विपश्यी साधक श्री रमेश थानवी ने अपने व्यस्त कार्यक्रमों में से समय निकालकर पूज्य गुरुदेव के हिंदी और राजस्थानी दोहों का वर्गीकरण और संपादन कर असीम पुण्य अर्जित किया।

राजस्थानी दोहों का संकलन १९८८ में प्रकाशित हो गया था। परंतु किसी कारणवश हिंदी दोहों का संकलन १९९० में प्रकाशित हुआ। उसके बाद इसकी दूसरी, तीसरी और चौथी आवृत्ति क्रमशः १९९८, २००४ तथा २०१० में प्रकाशित हुई। अब यह पांचवां संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण मार्च २०१४ में प्रकाशित हो रहा है।

इस नये संस्करण में लगभग ९०० दोहे नये जुड़े हैं जो कि पू. गुरुदेव की डायरी के अतिरिक्त समय-समय पर प्रकाशित पत्रिका एवं उनके द्वारा प्रयुक्त प्रातःकालीन वंदना, सामान्य शिविर ही नहीं बल्कि दीर्घ शिविरों के दौरान अधिष्ठानों को आरंभ करते हुए तथा

उनका अंत करते हुए उनके द्वारा जिन मार्मिक दोहों का गायन किया गया वे विशेषरूप से प्रेरणाजनक हैं। इन्हें सुन कर जैसे शिविर के दौरान साधकों को साधना करते हुए बल मिलता है, वैसे ही जीवन व्यवहार में भी सुनने और गुनगुनाने का अपना लाभ है। ये दोहे ज़बान पर चढ़ जायँ तो जीवनपथ के पग-पग पर आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध होंगे और संकट के समय कवच की भांति धर्मपूर्ण सुरक्षा प्रदान करेंगे।

विपश्यना विशोधन विन्यास इस पुस्तक का प्रकाशन कर धन्यता अनुभव कर रहा है। विश्वास है हिंदी भाषा में धर्म की अनमोल वाणी का यह संग्रह केवल साधकों को ही नहीं, बल्कि सभी पाठकों को समानरूप से रुचिकर एवं प्रेरणास्पद प्रतीत होगा। पाठक इस मंगलवाणी से उत्साहित होकर धर्मपथ के पथिक बनेंगे और अपना सही मंगल साध सकेंगे।

सबका मंगल हो!

प्रकाशक,

विपश्यना विशोधन विन्यास

न तेरे!

न मेरे!

ये दोहे धरम के!

काम आएं सब के!

मैल काटें मन के!

सादर करूं प्रणाम

नमन करूं गुरुदेव को

नमन करूं गुरुदेव को, कैसे संत सुजान।
कितने करुणा चित्त से, दिया धरम का दान॥

जय जय जय गुरुदेव जी, नमनूं शीश नवाय।
धरम रतन ऐसा दिया, पाप समीप न आय॥

नमन करूं गुरुदेव को, चरणन शीश नवाय।
धरम रतन ऐसा दिया, पाप उपज नहिं पाय॥

नमन करूं गुरुदेव को, सादर शीश नवाय।
धरम रतन ऐसा दिया, पाप उखड़ता जाय॥

गुरुवर! तेरे चरण की, धूल लगे मम शीश।
सदा धरम में रत रहूं, मिले यही आशीष॥

आज नमन का दिवस है, अंतर भरी उमंग।
श्रद्धा और कृतज्ञता, विमल भक्ति का रंग॥

ग्रहण करूं गुरुदेवजी, ऐसी शुभ आशीष।
धर्म बोधि हिय में धरूं, चरण नवाऊं शीश॥

गुरुवर! तुम मिलते नहीं, धरम गंग के तीर।
तो बस गंगा पूजता, कभी न पीता नीर॥